ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका
वर्ष 23, अंक 267, अक्टूबर 2017

संरक्षक
केदारनाथ सिंह
इंद्रनाथ चौधुरी

संपादक
शंभुनाथ

परिषद अध्यक्ष
डॉ. कुसुम खेमानी

प्रकाशक
नंदलाल शाह

संपादन सहयोग और अंक सज्जा
सुशील कान्ति

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता-700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारकनाथ राय

इस अंक में

संपादकीय 5

कहानियाँ

पति, पत्नी और पिता/**संजय कुंदन** 10
आस्तिक/**जयप्रकाश कर्दम** 20
आशा साहनी के बहाने/**रीता गुप्ता** 27
हाथी चले बाजार (मैथिली कहानी)/**देवशंकर नवीन** 33

परिचर्चा

कवि संवाद : कुछ होगा कुछ होगा, अगर मैं बोलूंगा
लीलाधर जगूड़ी/राजेश जोशी/अरुण कमल/प्रभात त्रिपाठी/लीलाधर मंडलोई/कुमार अंबुज
(प्रस्तुति : अच्युतानंद मिश्र) 39

कविताएँ

ज्ञानेंद्रपति/निर्मला तोदी/नीलिमा सिन्हा
डोगरी कविताएँ : **पद्मा सचदेव**
कहरी सिंह मधुकर/यश शर्मा 60

स्मृति

राष्ट्रीय संस्कृति : प्रगतिशील आंदोलन
रामविलास शर्मा
(अनुवाद और प्रस्तुति : विजय मोहन शर्मा) 69
राष्ट्रवाद, रवींद्रनाथ और गांधी
इकबाल अहमद से साक्षात्कार
(अनुवाद और प्रस्तुति : अच्युतानंद मिश्र) 76

समकालीन कविता : परंपराएँ और चुनौतियाँ

संजय राय

कविता अन्य कलाओं से एक अलग कला माध्यम है। यह विशुद्ध कला नहीं है। कविता की कला के साथ जब सामाजिक दायित्वबोध जुड़ता है, तो कविता अन्य कलाओं से थोड़ा अलग हो जाती है। ऐसा नहीं है कि अन्य कलाओं में सामाजिकता नहीं होती, पर शब्दों से जुड़े होने के कारण कविता अपने कहन में सामाजिक मूल्यों को स्वभावतः अपनाती है। हिंदी कविता की अब तक की यात्रा कविता में सामाजिक मूल्यों और सामाजिक दायित्वबोध के सघन होते जाने की यात्रा है।

जब समकालीन कविता की बात होती है, तो पहला सवाल उसकी शुरुआत को लेकर खड़ा होता है। '60 के बाद की कविता को पूर्ववर्ती कविता से अलगाने के लिए 'समकालीन' शब्द का प्रयोग हुआ था। '60 के बाद पैदा हुए मोहभंग को समकालीनता के प्रस्थान बिंदु के रूप में स्वीकार करने की एक प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।

रघुवीर सहाय लिखते हैं, 'मेरी दृष्टि में समकालीनता मानव-भविष्य के प्रति पक्षधरता का दूसरा नाम है।' (लिखने का कारण, 1978) स्पष्ट है कि समकालीनता सिर्फ वर्तमान नहीं होती, उसके बनने में अतीत की चेतना और भविष्य के स्वप्न भी शामिल हैं। वस्तुतः समकालीनता समय के सर्वाधिक नएपन को उसकी संपूर्ण जटिलता में पकड़ने की कोशिश है। समकालीनता यह काम तभी कर सकती है जब उसमें ऐतिहासिक चेतना, द्वंद्वात्मक विश्वदृष्टि, संपूर्ण परंपरा से जुड़ाव और भविष्य के लिए एक बड़ा स्वप्न हो।

इटली के प्रसिद्ध दार्शनिक जार्जियो एगमबेन समकालीनता को परिभाषित करते हुए लिखते हैं, 'समकालीनता किसी व्यक्ति का अपने समय के साथ ऐसा अनोखा संबंध है, जिसमें व्यक्ति अपने समय के मुताबिक चलता भी है, साथ ही उससे एक निश्चित दूरी भी बनाए रखता है।' (ह्वाट इज एन ऐपरेटस एंड अदर एसेज, 2009) इस प्रकार कहा जा सकता है कि समकालीनता एक द्वंद्वात्मक अवधारणा है, इसलिए एक गतिशील अवधारणा भी है। वास्तव में समकालीनता समय के साथ एक